शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'आंध' आदिवासी लोकगीत : कृषि गीतों के विशेष संदर्भ में

विश्वनाथ महादु देशमुख
राजाराम महाविद्यालय
कोल्हापुर, महाराष्ट्र, भारत

शोध संक्षेप

भारत एक कृषि प्रधान देश है। समाज के अधिकांश लोग अन्य व्यवसाय की अपेक्षा खेती को प्रमुखता देते हैं। कृषि कर्म करते समय किसान का स्वर उमड़ पड़ता है। आदिवासी जनजातियाँ श्रम परिहार के लिए कार्य करते समय तथा रात के समय स्त्री और पुरुष एकत्र आकर गीतों की प्रस्तुती करते हैं। प्रकृति की गोद में जीवनयापन करते समय उसके विभिन्न रूपों से वे परिचित होते हैं। आदिवासी का वनों, जंगलों से नाता परंपरा से चला आ रहा है। वे प्रकृति को ही अपना भगवान मानते हैं। खेती का प्रमुख आधार बारिश होती है। अपने परिवार का उदरभरण फसल पर निर्भर होने के कारण पेड़-पौधे, जमीन-आकाश, जल आदि के प्रति आराधना व्यक्त करते हैं। उनके लिए प्रकृति ही सब कुछ होती है। इस कारण वे अपनी संवेदना गीतों के द्वारा प्रकट करते हैं। लोकसाहित्य की प्रमुख आत्मा लोकगीतों को कहा जाता है। कृषि गीतों की मौखिक परंपरा का निर्वाह पीढ़ी-दर-पीढ़ी होता हुआ दृष्टिगोचर होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'आंध' आदिवासी लोकगीतों का विश्लेषण किया गया है।

मूलशब्द : कृषि प्रधानता, आदिवासी जनजातियाँ, श्रम परिहार, प्रकृति, लोकसाहित्य, लोकगीत, संवेदना

प्रस्तावना

विश्व के अनेक देशों में लोकसाहित्य की परंपरा का प्रचलन देखा जाता है। अशिष्ट जाति-जनजातियों की संख्या हर एक देश में हैं। इंग्लेण्ड, जर्मनी, अमरिका आदि देशों के भाषा वैज्ञानिकों ने 18-19वी शताब्दी में लोकसाहित्य का अध्ययन प्रारंभ किया। जर्मनी के भाषाविज्ञों ने कथा, गीत, विधि आदि का संकलन कर अध्ययन किया था। लोकसाहित्य के संबंध में सैद्धान्तिक विवेचन करने का यह प्रथम प्रयास देखा जा सकता है। भारतीय परंपरा और संस्कृति की दृष्टि से लोकसाहित्य का स्थान ऊँचा है। भारतीय संस्कृति की झलक विभिन्न भाषाओं में सृजित लोकसाहित्य में दिखाई देती है। लोकसाहित्य के विभिन्न रूपों का दर्शन आज समाज के अशिष्ट समाज में अधिक पाया जाता है। लोकसाहित्य चिरंतन, उदात्त जीवन और संस्कृतिक मूल्यों का जतन करनेवाला साहित्य है। यह नगरों, उपनगरों से दूर वनों, जंगलों, दुर्गम प्रदेशों, पहाडों में मौखिक परंपरा का निर्वाह करते हुए पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा है। भारत के आदि संतों द्वारा सृजित मौखिक साहित्य अमूल्य निधि है। वर्तमान में आज भी इस परंपरा का निर्वाह करते हुए आदिवासी समूह जीवनयापन कर रहे हैं।

आंध आदिवासी समाज : परिचय

विद्वानों के मतानुसार महाराष्ट्र में आदिवासी जनजातियों की संख्या 47 के आस-पास मानी गई है। गोंड, प्रधान, कोलाम, भिल्ल, आंध, मड़िया, नागा, वारली, कोकणी आदि प्रमुख हैं। आदिवासी जनजातियों में 'आंध' समाज का एक विशेष स्थान है। आंध का अस्तित्व महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश में पाया जाता है। महाराष्ट्र के विदर्भ, मराठवाडा तथा आंध्रप्रदेश के

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आदिलाबाद और निर्मल जिलों में इनकी बहुतायात है।

'आंध' समाज का लोकसाहित्य के अनेक प्रकार का है। जैसे - लोकगीत, लोककथा, लोकनाट्य, कलापथक, लोककला, लोकसुभाषित जैसे- मुहावरें, कहावतें, लोकोक्तियाँ आदि।

'आंध' आदिवासी समाज में लोकगीतों का अधिक महत्व है। अनेक प्रसंगों पर गीत प्रस्तुत करने की परंपरा प्राचीन काल से देखी जाती है। सुख-दुख के प्रसंगों पर पुरुष और स्त्रियाँ अपनी भावनाओं को स्वरों के माध्यम से प्रकट करती है। इनके गीतों का स्वरूप अलंकार रहित होने कारण इन गीतों को सहज रूप से समझा जा सकता है। 'आंध' में निम्नांकित रूप से लोकगीतों को पाया जा सकता है- देवी-देवता विषयक लोकगीत, संस्कार गीत, पारिवारिक संबंधों के गीत, व्रत तथा त्यौहार गीत, श्रमगीत, पुरुषो के लोकगीत, छोटे बच्चों के गीत आदि। इस तरह विभिन्न प्रसंगों पर गीत गाने की प्रथा आंध समाज में दृष्टिगोचर होती है।

आंध आदिवासी कृषि गीत

'आंध' आदिवासी समाज में स्त्री तथा पुरुष श्रम करते समय गीतों का उच्चारण करते हैं। पुरुष काम करते समय अपने स्वरों को होठों पर लाता है। जंगल से उसका प्राचीन काल से नाता रहा है। उसे जंगलों से जो मिलता है, उसे वह ईश्वर तथा पूर्वजों की दुआ मानता है।

वनों, जंगलों से लकड़ियाँ लाना, शिकार करना, वृक्ष (टेंभी) के पत्तों को इकट्ठा करना, महुए के फूल आदि उदरभरण की वस्तुएँ लेकर आता है। प्रकृति के प्रति उसके मन में अगाध श्रद्धा है। वह कहता है -

"आकाशाच्या देवा कवून रे तापला
असे सूर्य देव तापून लाल झाला
मात्र अंजनाच्या पोटी
मरोती का हो जलमला
जलमता सूर्या गिलाया निघाला
सूर्या गिलाया निघाला
म्हणून सूर्या तंबड़ा लाल झाला" (संकलन)

इस प्रकार के गीत 'आंध' आदिवासियों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी दृष्टिगत होते हैं। 'आंध' समाज अन्य भाषा-भाषी समाज के संपर्क में आने से अपनी मूल संस्कृति को भूलता जा रहा है। अन्य संस्कृति उसे प्रभावित कर रही है। फिर भी आज कुछ ऐसा मौखिक संग्रह उसके पास मिलता है जो आंध की विशेष पहचान को उजागर करता है।

"निसर्गपूजक आमी आंध
चंद्र सूरी आमचा अधिपति
परथम नमन निसर्गाला
दूसरे द्ररविडाला
आदिवासिच्या पूर्वजा
तुझ्या पासून झाली उत्पति
अन्य प्राणी आमी पूजातों
वाघ नाग वृक्षाला समरतो
आकाशात वीज चमचम करती
तिला पाहुनी आंध समझती
आकाशात धनुष्य दिसतो
आंधाना फारच हरष होतो" (संकलन)

'आंध' समाज अपना पेट, वनों, जंगलों से मिलने वाले अन्य साधनों से भरता है। मराठवाडा तथा विदर्भ के अनेक 'आंध' लोग अपना पेट भरते के लिए आंध्रप्रदेश में जाते हैं। वहाँ उन्हें श्रम के अनुकूल अधिक पैसे भी मिलते हैं।

आज अन्य समाज की तरह 'गाँव' में बसे 'आंध' कृषि कर्म कर रहे हैं। आज कृषि उनका महत्वपूर्ण अंग बन गया है। बीज बोने से लेकर फसल पूर्ण होने तक सभी कार्य करने पड़ते हैं।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

धरती माता के प्रति 'आंध' अधिक नतमस्तक होता है। उसके पूरे परिवार का पेट भरने वाली इस धरती की ओर वह भावुकता से देखता है।

"सूर्या हो सुर्या नमन करीतो तुया
आकाशीच्या हे चंद्रा नमन करतो तुया
नमन कुणा कुणा ला हो धरती माता ला हो
नद्या- नाल्याना डोंगराना हो
नमन कुणा ला हो धरती मातेला हो" (संकलन)

खेत में बीज बोने के पश्चात बारिश न होने के कारण 'आंध' किसान चिंता से घिर जाता है। वह प्रकृति के सभी इकाईयों को नमन करता है।

मराठवाडा तथा विदर्भ में बारिश अन्य क्षेत्र की तुलना में कम ही रहती है। यहाँ अधिकतम खेती बरिश पर निर्भर होती है। उनके सभी परिवार का पेट फसल पर निर्भर है। 'आंध' किसान की पत्नी उसके साथ इस संकट का सामना करने हेतु खड़ी हो जाती है -

"मेघा बरसरे लवकरी मेघा बरसरे लवकरी
उडदाच्या तासो तासी राही सरवा येची
सरवा येचिता येचिता कानाने धरले हात
सोड सोड रे काना मीत तुई भासी
देवा घरची दासी मेघा बरसरे लवकरी
मुगच्या तासोतासी राही सरावा येची
सरावा येचिता येचिता कानाने धरले हात
सोड सोड रे काना मीत तुई भासी
देवा घरची दासी मेघा बरसरे लवकरी
चवलीच्या तसो तासी राही सरवा येची
सरावा येचिता येचिता कानाने धरले हात
सोड सोड रे काना मीत तुई भासी
देवा घरची दासी मेघा बरसरे लवकरी
जवारीच्या तसो तासी राही सरवा येची
सरावा येचिता येचिता कानाने धरले हात
सोड सोड रे काना देवा घरची दासी।
मेघा बरसरे लवकरी बाजरीच्या तसोतासी
राही सरवा येची सरावा येचिता येचिता
कानाने धरले हात सोड सोड रे काना
मीत तुई भासी देवा घरची दासी
मेघा बरसरे लवकरी तुरीच्या तसोतासी
राही सरवा येची सरावा येचिता येचिता
कानाने धरले हात सोड सोड रे काना
मीत तुई भासी देवा घरची दासी।" (संकलन)

'आंध' स्त्री वरुण देवता को बरसने का अनुरोध करती है। उसके खेत पानी के बिना सूखते जा रहे हैं, उसका पूरा परिवार इस फसल पर निर्भर है। वह कृष्ण से भी संकटों से मुक्त करने की विनती कर रही है। वह स्वंय को ईश्वर की दासी मानती है। उसका खेत अनेक प्रकार की फसल से लहराता है, उस फसल को पानी के बिना मरते नहीं देख सकती।

इस प्रकार वह अपने श्रद्धा-भाव धरती माँ के प्रति व्यक्त करती है। फसल अच्छी आने हेतु पुरुष उसकी पूजा करता है। अपने पूर्वजों से आशीर्वाद लेता है। 'आंध' अपने खेत में बीज बोते समय बैलों की सहायता लेता है। खेती के अवजारों की सही पहचान होना आवश्यक होता है, वह उसके संबंध में कहता है-

"तिफण भरली करागीरी
दांडी लावून दोरी
फारुले बरसले फरार
वरी चाड़े दोर
तिफण नेली वावरा
नांगोर तिचा नवरा
तिफण लावली सुर्वेतल
बसुराजच्या बल
तिफण गेली अड़तास
डवरा तिचा भासा
तिफण गेली धुर्यावर
वखोर तिचा देर"(संकलन)

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इन गीतों के द्वारा 'आंध' किसान औजारों के बीच का रिश्ता जोड़ देता है। तिफण, फरुले, नांगोर, वखोर आदि शब्दों का प्रयोग खेती कार्य में आता है। इन अवजरों के माध्यम से ही वह अपना भविष्य सुखद बना सकता है।

किसान के श्रम में उसकी पत्नी भी उतना ही श्रम का योगदान देती है। उसकी आँखों के सामने फसल खड़ी हो जाती है तब उसे अत्यंत ख़ुशी होती है। मराठवाडा में अधिकतर कपास, जवार आदि की फसल ली जाती है। जब जवार की फसल खेत में खड़ी होती तब वह अपने घर से खुशी-खुशी खेत जाती है -

"जाईल मनल शेता
खाईन मनल हुरडा
काढ़ीन मनल धुराड़ा माय व।
दूरड्या वरी दूरड्या
जाईल मनल शेता
खाईन मनल ओंब्या
खेळील मनल झोंब्या माय व।
दूरड्या वरी दूरड्या
जाईल मनल शेता
खाईन मनल वाळक
फोडीन मनल टाळक
मनाला व्हता माय व।" (संकलन)

इस प्रकार 'आंध' स्त्री अपनी मनोदशा का चित्रण करती है। बीज बोने से लेकर फसल खड़ी होने तक सभी कार्य अपने पति के साथ करती है। उसकी मेहनत के कारण फसल को खडी देखकर वह हर्ष से खिल उठती है।

निष्कर्ष

निष्कर्षता: हम कह सकते हैं कि 'आंध' आदिवासी समाज का लोकसाहित्य विपुलमात्रा में आज भी दृष्टिगत होता है। 'आंध' समाज की संख्या अन्य समाज की तुलना में अधिक न होने के कारण लोकसाहित्य का स्वरूप सभी क्षेत्र में लगभग वही होता है। 'चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी' उक्ति के अनुसार 'आंध' की बोलीभाषा के शब्द भी क्षेत्र के अनुसार परिवर्तित होते हैं। परंतु भले ही शब्दों में अंतर हो संस्कृति के निर्वाह में एकरूपता दृष्टिगोचर होती है।

'आंध' जनजाति प्रकृति की गोद में जीवनयापन करने के कारण वह उसकी सभी प्रकार की आहटों से परिचित है। खेत उसका प्रमुख साधन होने के कारण वरुण देवता पर वह अधिक निर्भर है। श्रम करते समय गीतों का प्रस्फुटन सहज होता है। कृषि कर्म तथा चक्की पिसते समय गीतों की धारा और तेज होती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 डॉ. उपाध्याय कृष्णदेव, लोकसाहित्य की भूमिका, प्रथम संस्करण, साहित्य भवन, इलाहबाद, 2010 ई.

2 डॉ. धनजकर राजेश, मराठवाडयातील आंध जमातीचे लोकसाहित्य, प्रथम संस्करण, अनुराधा प्रकाशन, नांदेड़, 2013 ई.

3 संकलन, गव्हाड़े गणपत, श्रमगीत, ग्राम- कुसलवाड़ी, तहसील- हदगांव, जिला नांदेड़

4 संकलन, गव्हाड़े यादोजी, श्रमगीत, ग्राम- कुसलवाड़ी, तहसील- हदगांव, जिला नांदेड़

5 संकलन, तुकाराम हागवणे, श्रमगीत, ग्राम- कोरटा, तहसील- उमरखेड़, जिला- यवतमाळ

6 संकलन, शांताबाई तांबोरे, श्रमगीत (ग्राम- धानोरा, तहसील- किनवट, जिला- नांदेड़)

7 संकलन, सखाबाई कुरुडे, श्रमगीत, ग्राम- डोंगरगांव, तहसील- किनवट, जिला- नांदेड़

8 संकलन, भूरके पंचफुलाबाई, श्रमगीत, ग्राम- इंजेगांव, तहसील- किनवट, जिला- नांदेड़,